तरुणों के अनुशासित व्यक्तित्व विकास में अभिभावकों की भूमिका

अंजली द्विवेदी[1] एवं मोहित कुमार तिवारी[2],
[1]पताः 4/459 विवेक खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ–226010, उ0प्र0, भारत
[2]पताः 1/626, रूचि खण्ड, शारदा नगर, लखनऊ–226002, उ0प्र0, भारत
deepanjali2010@gmail.com, drmohit2008@gmail.com

प्राप्त तिथि–03.10.2018, स्वीकृत तिथि–29.10.2018

सार– हमारे जीवन में अनुशासन का बहुत महत्व है। इसके अभाव में मनुष्य प्रकृति प्रदत्त शक्तियों का उचित प्रयोग नहीं कर सकता है। अनुशासन द्वारा प्राप्त इस शक्ति से वह अपनी नैसर्गिक प्रवृत्तियों का विकास करने में समर्थ होता है। यदि किसी समाज एवं देश के नागरिक अनुशासित होंगे तो वे अपने देश को उन्नति के पथ पर अग्रसर कराने में भी समर्थ होंगे। अनुशासित रहने की शिक्षा का प्रारम्भ शैशवावस्था से घर में प्रारम्भ हो जाता है। जहाँ शिशु अपने माता–पिता, भाई–बहन एवं परिवार के अन्य सदस्यों से विभिन्न नैतिक एवं सामाजिक मूल्य एवं आचरण सीख कर स्वयं को अनुशासित बनाता है। घर बालक की प्रथम पाठशाला एवं माँ पहली शिक्षिका होती है। बाल्यकाल से ही माँ बालक को प्रेम, सत्यनिष्ठा, परोपकार, बड़ों का आदर, आज्ञाकारिता आदि गुणों का पाठ सिखाती है। वहीं पिता से बालक उत्तरदायित्व, नेतृत्व, सुरक्षा, संरक्षण आदि गुणों को सीखता है। घर पर सीखे गये ये नैतिक आचरण बालक की विद्यालययी जीवन को प्रभावित करते हैं। अध्ययनों में यह भी देखा गया है कि जिन परिवारों में माता–पिता चरित्रवान एवं उच्च नैतिक गुणों से सम्पन्न होते हैं, उनके बच्चे भी चरित्रवान एवं अनुशासित होते हैं। वहीं जिन घरों में अभिभावक चरित्रवान नहीं होते एवं बच्चों को नैतिक गुण नहीं सिखाते, वे बच्चे विद्यालय में जाकर अनुशासनहीनता प्रदर्शित करते हैं। अतः माता–पिता का दायित्व है कि वे बाल्याकाल से ही बच्चों में उच्च नैतिक गुणों का विकास करने हेतु उचित निर्देशन प्रदान करें।

बीज शब्द– अनुशासनहीनता, निर्देशन, नैतिक मूल्य, सामाजिक मूल्य।

Parental role in disciplined personality development of youngsters

Anjali Dwivedi[1] and Mohit Kumar Tiwari[2]
[1]Res: 4/459, Vivek Khand, Gomti Nagar, Lucknow-226010, U.P., India
[2]Res: 1/626, Ruchi Khand, Sharda Nagar, Lucknow-226005, U.P., India
deepanjali2010@gmail.com, drmohit2008@gmail.com

Abstract- Discipline is very important in the life of human beings. In the absence of discipline an individual utilizes his energy in abnormal and useless activities. A well disciplined man can develop positive energy or improvement of his personalities. If the citizen of the society and the country are disciplined they establish the higher moral and social values for the devlopment of the society, the country and humanity and the global seenerio. Disciplined behaviour is learned in the childhood from the parents and other family members. The home is considered as Child's first school and mother as first teacher. Mother teaches her children the lesson of love, honesty, integrity, affection respect for elders and obedience where as father guides for sense of responsibilitiy, leadership, security etc. These moral values learnd at home influences the behavior of the child in the school. It has been observed that where the parents are with higher moral values, their children are well behaved and disciplined where as children who didn't learn moral values at home are the most indiciplined students in their school life. That is why it is the responsibility of the parents to keep an eye and guide their wards to follow higher moral and ethical values, so that children can become a responsible citizen of the nation.

Key words- Indiscipline, guidance, moral values, social values.

1. **परिचय–** वर्तमान युग में मानव की बढ़ती आवश्यकताओं, गरीबी, आर्थिक संकटग्रस्तता ने परिवार में स्त्री एवं पुरूष दोनों को नौकरी करने पर विवश कर दिया है। अधिकांश परिवार ऐसे भी हैं, जहाँ माताएं अति महत्वाकांक्षी होने के

कारण अपने कैरियर को परिवार से ज्यादा महत्व देती हैं, इस कारण बच्चे के पालन पोषण की अनदेखी होती जा रही है, मध्यवर्गीय परिवारों के बच्चे अकेलेपन में ही पल रहे हैं, क्योंकि माता–पिता दोनों ही काम करते हैं तथा अमीर परिवारों के बच्चे घरेलू सेवकों के भरोसे पल रहे हैं। ऐसे में जो संस्कार माता–पिता द्वारा बच्चों में पहुंचने चाहिये थे, वे विलुप्त होते जा रहे हैं। माता–पिता के निर्देशन के अभाव में बच्चों में विविध प्रकार की विकृतियाँ उत्पन्न हो रही हैं। इन विकृतियों में शारीरिक, मानसिक, सांवेगिक, व्यवहारिक सभी प्रकार विकृतियाँ सम्मिलित हैं। माता–पिता का पर्याप्त मार्गदर्शन न मिलने के कारण बच्चे गुस्सैल, आवेशी, जिद्दी, अविज्ञाकारी, हिंसक एवं विघटनकारी प्रवृत्ति के होते जा रहे हैं, जिससे उनमें अनुशासनहीनता बढ़ती जा रही है। परिवार में उत्पन्न यही अनुशासनहीनता विद्यालय में भी परिलक्षित होती है।[1]

2. **परिवार का अर्थ एवं महत्व–** मनुष्य अपने आदि युग में पशु तुल्य जीवन जीता था। वह अपने रहने के लिए सुरक्षित स्थान का निर्माण अवश्य करता था, परन्तु उस घर में रहने वाले व्यक्तियों में आज जैसे भावनात्मक सम्बन्ध नहीं होते थे। परिणामतः बच्चों का पालन–पोषण एवं वृद्ध होने पर स्वयं अपने जीवन की रक्षा करने में मनुष्यों को बड़ी परेशानी होती थी। इसी प्रकार के अनेकों आवश्यकताओं ने मनुष्य को परिवार में बांध दिया। इस प्रकार परिवार सबसे पहला व सबसे छोटा मूलभूत सामाजिक समूह बना।

3. **परिवार के उत्तरदायित्व एवं कार्य**–

1. पारिवारिक सामंजस्य
2. बच्चों के पालन पोषण की उचित व्यवस्था करना।
3. बच्चों की सामान्य शिक्षा वातावरण हेतु उचित पर्यावरण का निर्माण करना।
4. बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायता करना।
5. बच्चों में नैतिक गुणों का विकास करना।
6. प्रेम, सहयोग, धैर्य, संयम, सहनशीलता आदि गुणों का विकास करना।
7. बच्चों की विद्यालययी शिक्षा हेतु उचित व्यवस्था करना।
8. बच्चों के समाजीकरण में योगदान देना।
9. अनुशासन व उत्तरदायित्व की भावना का विकास करना।
10. भाषा का विकास करना।
11. समाज अथवा राज्य द्वारा निश्चित शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति में सहयोग करना।
12. अपनी संस्कृति का संरक्षण करना व उसे बच्चों को हस्तान्तरित करना

4. बालक के नैतिक एवं चारित्रिक विकास में परिवार की भूमिका– प्रत्येक समाज के अपने कुछ सामाजिक नियम होते हैं। सामान्य रूप से इन नियमों को नैतिकता और नियमों के अनुसार आचरण करने की शक्ति को चरित्र कहते हैं। बिना नैतिकता एवं चरित्र के किसी समाज की सभ्यता एवं संस्कृति सुरक्षित नहीं रह सकती। नैतिकता एवं चरित्र श्रेष्ठ मनुष्यों के लक्षण हैं, तभी प्रत्येक समाज इनके विकास पर बल देता है। परिवार बच्चों के नैतिक एवं चारित्रिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सुप्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक स्किनर[2] ने कहा था कि बच्चा अनुकरण द्वारा ही सीखता है अर्थात् शिशु अपने परिवार में जैसा आचरण, व्यवहार एवं भाषा देखता है, वही सीखकर उसी के अनुरूप वह भी व्यवहार करता हैं। यदि परिवार के सदस्य नैतिक एवं चरित्रवान हैं तो उनका अनुकरण कर बच्चे नैतिकता का सच्चा पाठ पढ़कर चरित्रवान बनते हैं। ऐसे परिवारों के बच्चे आज्ञा पालन, कर्तव्य पालन, सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, दया, परोपकार, अनुशासन प्रियता, बलिदान, मिलजुल कर रहना, उत्तरदायित्वपूर्ण व्यवहार करना, शुद्ध एवं संयमित भाषा का प्रयोग करना व उच्च नैतिक आचरण प्रदर्शित करते हैं, परन्तु यदि माता–पिता अनैतिक एवं चरित्रहीन हैं तो उनके बच्चे भी उन्हीं के अनुरूप आचरण करते हैं। हमारे यहाँ इस पर कहावत प्रसिद्ध है कि "जैसे जिनके बाप महतारी, तैसे तिनके लरिका"।

5. **बालक के नैतिक एवं चारित्रिक विकास में विद्यालय की भूमिका–** प्रत्येक समाज में विद्यालयों को एक आदर्श समाजिक संस्था के रूप में विकसित किया जाता है और उनसे यह आशा की जाती है कि वे बच्चों का नैतिक एवं चारित्रिक विकास करेंगे। अच्छे विद्यालय इन सबके लिए प्रयत्नशील रहते हैं। परन्तु वे अपने कार्य में तब अधिक सफल होते हैं जब अभिभावक उनका सहयोग करते हैं। अच्छे परिवारों के सदस्य अपने बच्चों को विद्यालय के नियमों, समय से विद्यालय जाना, गुरूओं की आज्ञा का पालन करना, सभी से प्रेम, सहानुभूति एवं सहयोगपूर्ण व्यवहार करना, शान्ति के साथ उठना, बैठना एवं चलना, निश्चित समय पर निश्चित कार्य करना, विद्यालय में दिये गये कार्यों को नियमित रूप से करना इत्यादि सिखाते हैं। इस प्रकार परिवार विद्यालय के सहयोगी की भूमिका निभाकर बच्चे को अच्छा नागरिक बनने में सहयोग करते हैं।[3]

6. **अनुशासनहीनता का अर्थ एवं परिभाषा–** जब बालक का नैतिक व चारित्रिक विकास उचित ढंग से नहीं होता है तो वे अनैतिक गुणों का प्रदर्शन करने लगता है। दूसरे शब्दों में कहें तो बालक अनुशासनहीन बन जाता है। *''अनुशासनहीनता से तात्पर्य समाज में स्थापित मूल्यों की अवहेलना करना और उनके विरूद्ध कार्य करना होता है''* अनुशासनहीनता केवल घर पर ही नहीं, वरन विद्यालय, समाज एवं देश के लिए भी विकट समस्या उत्पन्न करती है।[4]

7. **विद्यालय में छात्रों द्वारा प्रदर्शित अनुशासनहीनता के कुछ रूप–**
विद्यालय देर से आना, शिक्षकों का सम्मान न करना, सहपाठियों से लड़ाई–झगड़ा करना, अशिष्ट शब्दों का प्रयोग करना, शिक्षकों एवं सहपाठियों से दुर्व्यवहार करना, विद्यालय में आपत्तिजनक वस्तुएं लेकर आना, विद्यालय परिसर से बिना बताये चले जाना, गृह कार्य न करना, विद्यालय की वस्तुओं को क्षति पहुँचाना, पढ़ाई में ध्यान न देना इत्यादि।

8. **छात्रों द्वारा विद्यालय में प्रदर्शित अनुशासनहीनता के कारण निम्नवत हैं–**

अ. **माता–पिता का अनुचित दृष्टिकोण–** जिसके अन्तर्गत निम्नलिखित कारणों को सम्मिलित किया जा सकता है–

माता–पिता का बच्चों के साथ पक्षपातपूर्ण व्यवहार, माता–पिता द्वारा नशे का सेवन, बच्चों को मारना एवं अत्यधिक कठोर व्यवहार करना, अत्यधिक रोक–टोक करना, प्रेरणा का अभाव, माता–पिता का स्वयं का अनैतिक व्यवहार, उचित सम्प्रेषण का अभाव, माता–पिता का अतिमहत्वाकांक्षी होना।

ब. **वातावरण सम्बन्धी कारक–** जिसके अन्तर्गत निम्नलिखित कारणों को सम्मिलित किया जा सकता है–

परिवार का तनावयुक्त वातावरण, घर व आस–पास का दूषित वातावरण, अत्यधिक कमजोर आर्थिक स्थिति।

स. **अन्य कारक–** जिसके अन्तर्गत निम्नलिखित कारणों को सम्मिलित किया जा सकता है–

शारीरिक एवं मानसिक दोष, अनुवांशिक, गुणसूत्र सम्बधित विकृतियां, पोषण का अभाव, प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति न होना, बच्चों का बुरी संगत में पड़ जाना।

9. **अभिभावकों द्वारा उचित निर्देशन के अभाव का अर्थ–** माता–पिता बच्चे के पहले अध्यापक होते हैं[5] और घर बालक की प्रथम पाठशाला। बच्चे नैतिकता का पहला पाठ घर पर ही सीखते हैं, किन्तु किसी कारणवश यदि बच्चे को घर पर उचित संस्कार नहीं मिल पाते तो ऐसी स्थिति में बच्चे का व्यवहार दोषपूर्ण हो जाता है। माता–पिता का न होना या माता–पिता की व्यस्तता दोनों ही स्थितियों में बच्चों पर नकारात्मक मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है जिस कारण बच्चे अनुशासनहीन बन जाते हैं। माता–पिता द्वारा उचित निर्देशन न मिलने से बच्चों में निम्नलिखित विकृतियाँ उत्पन्न होती हैं जैसे क्रोधी व्यवहार, जिद्दी, डरपोक, असुरक्षित, असहनशील, हिंसात्मक प्रवृत्ति, चोरी की आदत इत्यादि हैं। इन सभी समस्याओं का मात्र एक ही कारण है कि माता–पिता की अनुपलब्धता। यह अनुपस्थिति बच्चों को असमाजिक एवं अंधकारमय मार्ग की ओर ले जाती है, जिससे छात्रों की शिक्षा भी प्रभावित होती हैं। घर का अनुचित वातावरण बच्चों को अनुशासनहीन बना देता है। यही अनुशासनहीनता बच्चे विद्यालय में प्रदर्शित करते हैं जिससे विद्यालय का वातावरण प्रभावित होता है। कई बार माता–पिता द्वारा अथवा उनकी अनुपस्थिति में संरक्षकों द्वारा किया जा रहा अनुचित व्यवहार भी बच्चों में व्यवहारात्मक विसंगतियॉ उत्पन्न कर देता है, जिससे वे अनुशासनहीन हो जाते हैं।

10. **बच्चों में उत्पन्न अनुशासन हीनता को दूर करने हेतु सुझाव–**

1. बच्चों को पर्याप्त समय दें– आज के भौतिकवादी युग में जीवनयापन के साधन जुटाने हेतु स्त्री–पुरूष दोनों को ही नौकरी करनी पड़ रही है जिससे आर्थिक आवश्यकता तो पूर्ण हो जाती है, परन्तु कहीं न कहीं पारिवारिक जीवन प्रभावित हो जाता है। इसलिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि यदि माता–पिता दोनों ही काम करते हैं तो आपस में सामजस्य बिठाकर बच्चों के साथ अधिकतम समय बिताने का प्रयास करना चाहिये। हमेशा उनके मित्रों, स्कूल के वातावरण, उनकी पढ़ाई, उनकी समस्याओं इत्यादि विषयों पर मित्रतापूर्ण तरीके से बात अवश्य करें, ताकि बच्चा अपनी सभी समस्याओं पर खुल कर आपसे बात कर सके और उसके मन में कोई मनोवैज्ञानिक ग्रन्थि, कुण्ठा अथवा समस्या न रहे।
2. बच्चों से अत्यधिक महत्वकांक्षा न रखें, बच्चे की क्षमताओं और सीमाओं में रहकर ही उससे अपेक्षाएं करें।
3. बच्चे के विद्यालय के शिक्षक व अभिभावक सम्मेलन में अवश्य जायें।
4. बच्चों पर अत्यधिक अंकुश न लगाएं।
5. अपने बच्चों की तुलना दूसरे बच्चों से न करें। प्रत्येक बच्चे की क्षमताएं एवं रूचियॉ अलग– अलग होती हैं।
6. बच्चे की किसी असामान्य व्यवहार को अनदेखा न करें।
7. बच्चों के झूठ बोलने, चोरी करने, लड़ाई करने इत्यादि का मूल कारण जानने का प्रयास करें और उन्हें उचित निर्देशन दें, पर ऐसी घटनाओं को अनदेखा न करें।
8. कई परिवारों में माता–पिता आपस में लड़ाई झगड़ा, मार–पीट एवं अशिष्ट भाषा का प्रयोग करते हैं, इससे भी बच्चों के मन पर बुरा प्रभाव पड़ता है।
9. यदि माता–पिता परिवार के अन्य सदस्यों एवं आस–पास के लोगों से सम्मानपूर्वक व्यवहार नहीं करते तो बच्चे भी वही आचरण अपना लेते हैं।

10. माता–पिता यदि नशीले पदार्थों जैसे– सिगरेट, तम्बाकू इत्यादि का सेवन करते हैं तो बच्चे भी इनका प्रयोग करने लग जाते हैं।
11. बच्चों के मित्रों और विद्यालय के संगी–साथियों के बारे में पर्याप्त जानकारी रखें कि उनके मित्र कौन हैं, उनके परिवार का वातावरण कैसा है आदि, क्योंकि यदि मित्रों के परिवार का वातावरण अच्छा नहीं होगा तो मित्र के माध्यम से वह अनुचित व्यवहार आपके बच्चे में भी आ सकता है।[6]
12. बच्चों की दिनचर्या पर नजर रखें, बच्चे कब उठते हैं, रात में कितनी देर तक जागते हैं, कितना समय टी0वी0, मोबाइल, इन्टरनेट इत्यादि पर व्यतीत करते हैं तथा अपने प्रतिदिन के अध्ययन पर कितना समय देते हैं इत्यादि की समुचित जानकारी रखें।
13. बच्चों को आवश्यकता से अधिक धन न दें। यदि वे पैसे मांगते हैं तो इस बात का ध्यान रखें कि वह पैसा कहाँ और कैसे खर्च कर रहे हैं, उनकी आवश्यकता की वस्तुओं को आप स्वयं उनके साथ जाकर दिलवाने का प्रयास करें।
14. छोटे बच्चों को मोटर साइकिल अथवा कार चलाने की अनुमति न दें।
15. समय निकाल कर हमेशा बच्चों को उच्च नैतिक गुणों जैसे प्रेम, सहयोग, आज्ञापालन, शिष्टाचार, बड़ों का आदर, उचित अथवा अनुचित कार्यों में भेद, शिष्ट एवं अशिष्ट भाषा का अन्तर तथा असमाजिक व्यवहार एवं कार्यों की जानकारी दें, ताकि बच्चे स्वयं उचित निर्णय लेने में सक्षम हो सकें।
16. बच्चों से किसी प्रकार अनजाने में कोई गलत कार्य हो जाने पर उनसे अत्यन्त कठोरता का व्यवहार न करें, वरन पूरी बात समझ कर उन्हें सही दिशा–निर्देश देने का प्रयास करें।
17. यदि बच्चा अवसाद, चिन्ता, मानसिक द्वंद या किसी रोग से पीड़ित है तो उसे किसी चिकित्सक अथवा मनोचिकित्सक को दिखाकर उचित उपचार करायें। यदि विद्यालय में बच्चे को कोई परेशान करता है या चिढ़ाता है तो शिक्षक गलती करने वाले बच्चे को डाँट देते हैं, परन्तु बच्चे को डाँटना ही काफी नहीं होगा परन्तु उसे समझाना भी आवश्यक है कि भविष्य में इस प्रकार के आचरण की पुनरावृत्ति न हो।
18. बच्चे के विद्यालय के शिक्षकों के सम्पर्क में सदैव रहें ताकि बच्चे के व्यवहार उसके अध्ययनशीलता एवं अन्य गतिविधियों के बारे में आपको समुचित जानकारी रहे।
19. यदि बच्चे के परिवार में सब कुछ ठीक–ठाक है फिर भी बच्चा असमान्य, आवेगी, उद्दण्ड व्यवहार प्रदर्शित करता है तो हो सकता इसका कारण आनुवांशिक/गुणसूत्रीय विकृति हो[7] जिसके लिये अभिभावकों को विशेषज्ञ चिकित्सक से संपर्क करें, इस विकृति का पूर्ण उपचार तो सम्भव नहीं है परन्तु परामर्श एवं कुछ औषधियों से नियंत्रित किया जा सकता है।

11. **निष्कर्ष**– सामान्यतः बच्चे की अनुशासनहीनता का दोष विद्यालय के वातावरण पर मढ़ दिया जाता है, परन्तु वास्तविकता इससे भिन्न है। जिस विद्यालय में अलग–अलग आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक एवं पारिवारिक परिवेशों के बच्चे एक साथ पढ़ते हैं, वहाँ बच्चों को एक समान रूप से निर्देशित किया जाता है। किसी भी विद्यालय में दो–तीन प्रतिशत से ज्यादा विद्यार्थी अनुशासनहीन नहीं होते और यह अनुशासनहीनता उनमें विद्यालय के कारण नहीं परन्तु उनके पारिवारिक परिवेश के कारण होती है जहाँ बच्चा अपना अधिकांश समय व्यतीत करता है। वैज्ञानिक अध्ययनों से यह भी ज्ञात हुआ है कि कभी–कभी आनुवांशिक विकृतियों के कारण बच्चे के व्यवहार एवं आचरण में विकृतियाँ उत्पन्न हो जाती हैं, जिससे बच्चे अनुशासनहीन हो जाते हैं। अतः विद्यार्थियों के अनुशासनहीन व्यवहार के लिए माता–पिता एवं परिवार को अधिक सतर्कता बरतनी चाहिये, ताकि समय रहते ही इस समस्या का निदान किया जा सके।

सन्दर्भ

1. मिस्त्री, आर0; वैन्डेवाटर, इ0; हयूस्टन, ए0 एवं मैक्लॉयड, वी0(2002) इकोनॉमिक वेल बीइग एण्ड चिल्ड्रेस सोशल एडजस्टमेंट, द रोल ऑफ फैमिली प्रोसेस इन एन इथिनिकली डाईवर्स लो इनकम सैम्पल, चाइल्ड डेव0, खण्ड–73 अंक–3, मु0पृ0 935–951।
2. स्किनर, बी0 एफ0(1951) साइंस एण्ड हयूमन बिहेवियर, सिमन एण्ड श्यूस्टर पब्लिकेशन, यू0एस0ए0।
3. सुखिया, एस0 पी0; ठाकुर ए0 एस0 एवं ठाकुर, अभिनव(2015) एजुकेशनल ऑरगेनाइजेशन, एडमिनिस्ट्रेशन एण्ड हेल्थ एजुकेशनल कॉन्सेप्ट, प्रैक्टिसेस एण्ड इश्यूज, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, उ0प्र0।
4. वर्मा, दीप्ती(2018) विद्यालय में अनुशासनहीनता के 3 मुख्य कारण, शेयर योर एस्सेस.काम।
5. "बी देअर फेबरिट टीचर : ए पेरेन्टस् रोल इन चाइल्ड डेवलपमेंट" – चाइल्ड डेवलपमेंट.कॉम
6. वेन्लजेल, के0(1998) सोशल रिलेशनशिप एण्ड मोटीवेशन इन मिडिल स्कूलःद रोल ऑफ पेरेन्टस् टीर्चस एण्ड पिर्यस, जे0 एडू0 साइकोल0, खण्ड–90, अंक–2, मु0पृ0 202–209।
7. कार्लसन, एलोफ एक्सेल(1989) *"हयूमन जेनेटिक्स"*, टाटा मैकग्रॉ हिल पब्लिशर कम्पनी लि0, भारत।